ठुमरी गायकी की शैलियाँ

[redacted]

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ठुमरी गायन की शैलियाँ

ठुमरी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत एक लोकप्रिय गायकी है जो उपशास्त्रीय संगीत मानी गई है। इसे अर्द्ध शास्त्रीय संगीत (Light classical) उपशास्त्रीय संगीत इत्यादि नामों से जाना जाता है। ठुमरियाँ प्रायः मिश्र रागों में गायी जाती है। मिश्र – भैरवी, खमाज, पिलू आदि गायी जाती है। इनके साथ हल्के प्रभाव वाले रागों में भी ठुमरियाँ गायी जाती हैं।

ठुमरी की उत्पत्ति के संबन्ध में विद्वानों के अनेक मत हैं कुछ लोगों के अनुसार ठुमरी की उत्पत्ति नृत्य, गीत से हुई है। जिसमें नर्तक के द्वारा श्रृंगारिक पदों पर नृत्य करते हुए आंगिक भाव प्रदर्शन होते थे। उन्हीं नृत्य गीतों को गायकों के द्वारा बैठकर गाने से ही कालान्तर में ठुमरी का विकास हुआ है। नृत्य के ठुमका शब्द से ही ठुमरी का संबन्ध माना गया है।

कुछ लोग ठुमरी का जनक शोरी मियाँ को मानते हैं ये पंजाब के रहने वाले थे इनकी लिखी अनेक सारी ठुमरियाँ आज प्रचलित हैं। ठुमरी उत्पत्ति के आधार जो भी हो परन्तु शोरी मियाँ ठुमरी गायकी को अधिक प्रचलित किये। ठुमरीयों में अनेक श्रृंगारिक पद होते हैं पुरानी ठुमरीयों में कई पंक्तियाँ

प्रायः स्थाई और अन्तरा दो ही प्रकार के पद होते हैं। अधिक पंक्तियों वाली ठुमरी को देखने से ऐसा प्रचलित होता है कि शायद ये नृत संगीत हो। वर्तमान में हिन्दुस्तानी संगीत में अधिकतर ठुमरी जत, मसीतखानी, चिमा कहरवा आदि तालो में गायी जाती हैं। अधिकतर ठुमरी गायकी में उपर्युक्त तालों में, विलम्बित गति से ठुमरी के आरंभिक बोल को लेकर मुखड़ा बनाते हुए सम आते हैं और यहि से गायक अपनी स्वर सामर्थ्य एवं कल्पना शिलता के आधार पर मुखड़ा के शब्द को लेकर ताल के गति के अनुसार भावो की करता हैं। इस क्रम में कलाकार विभिन्न अलंकारें का सहयोग लेता है जैसे:- खटका, जमजमा, मिड, सूत, मुड़की इत्यादि। विलम्बित लय का अनुशरण करते हुए गायक कलाकार इन्हे भिन्न-भिन्न तरीकों से होते हुए मुखड़ा पकड़ कर सम दिखता है। लय को बढाते हुए कहरवा में द्रुत गति से ठुमरी के पद को गाते हुए तिहाई के साथ समाप्त करता है।

आधुनिक समय में देश में ठुमरी गायकी की तीन शैलियाँ प्रचलित हैं

(i) बनारस की गायकी जिसे पूर्व अंग की ठुमरी
(ii) पंजाब अंग की ठुमरी